श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-नई दिल्ली (स्थापित सन् 1906)
का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

सन् 1913 से निरंतर प्रकाशित होने वाला स्थानकवासी जैन परंपरा का प्राचीनतम् गौरवशाली समाचार पत्र

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420 Mob.: 9019731906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : https://jainconference.org

सम्पादक : डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

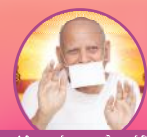
श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

जुलाई - द्वितीय, अंक - 18 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

Address
Here

भगवान महावीर ने ध्यान से परम कल्याण को प्राप्त किया

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

भारतीय संस्कृति की तीन मुख्य धाराएं है, 1. वैदिक धारा, 2. बौद्ध धारा, 3. जैन धारा। भगवान महावीर से पूर्व 23 तीर्थंकर और हुए हैं। भगवान महावीर ने साढ़े बारह वर्ष जंगलों में ध्यान और समाधि में रहकर आत्मा, कर्म, मोक्ष, जीवन लक्ष्य आदि पर गहन चिन्तन किया और जब उन्हें 'केवल ज्ञान' की उपलब्धि हुई तभी अपनी विचारधारा को जन मानस के सन्मुख रखा। अतः जैन धर्म एक स्वतंत्र धर्म ही नहीं बल्कि यह एक वैज्ञानिक धर्म भी है। इसमें कर्म-सिद्धान्त, अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्तवाद के सिद्धान्त सभी अद्भुत अलौकिक और अनुपम हैं और आत्म विकास और आत्म अनुशासन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

भगवान महावीर का संदेश पूरी मानव जाति के लिए है। साधारण जनता तक महावीर का संदेश लेकर जाना चाहिए। दूसरे देशों में भी भगवान महावीर के उपदेश और संदेश को प्रसारित करने की भारी आवश्यकता है। जन-कल्याण की योजनाएं संचालित कर हम भगवान महावीर के आचरण को लोगों तक आसानी से पहुँचा सकते हैं। भगवान महावीर ने आत्म संयम अथवा आत्म अनुशासन की बात कही है। त्रयरत्न जैन संस्कृति का आधार है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र के प्रकाश के बिना आत्मा अंधकार से प्रकाश की ओर जा ही नहीं सकती। जब हमारा सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र में ढ़लता है तब ही जीवन की सार्थकता निखर उठती है और हम अपनी नजरों में ऊपर उठने लगते हैं। भगवान महावीर का 'मित्ती में सव्व भूएसु' 'सभी जीव मेरे मित्र हैं' यह संदेश मानव जाति को मित्रता की ओर अग्रसर करता है। हमें हर जीव के लिए मंगल भावना रखनी चाहिए। दूसरे के मंगल में ही हमारा मंगल निहित है।

यह संदेश हमें सबका मंगल सोचने की और शुभ कार्यों में प्रवृत्ति करने की प्रेरणा प्रदान करता है। आओ कुछ समय एकान्त में बैठकर इन बिखरे विचारों पर चिन्तन करें। ध्यान आत्म शक्तियों को जागृत करने का प्रबल साधन है। अगर आप एक घंटा हर रोज ध्यान करेंगे तो कुछ दिनों में अपने अन्दर एक बदलाव, एक प्रकाश महसूस करने लगेंगे। भगवान् महावीर ने तो ध्यान से आत्म कल्याण की परम प्राप्ति की है। हमें भी ध्यान से जीवन की ऊर्जा प्राप्त कर आगे बढ़ना चाहिए। ध्यान और प्राणायाम हमारे शरीर और मन पर रचनात्मक प्रभाव डालते हैं। भारत की सभी संस्कृतियों ने ऊँचे स्वर से ध्यान और प्राणायाम की महत्ता को प्रकट किया है, इसीलिए हम आत्म ध्यान धर्म यज्ञ में प्रत्येक साधक को आत्म साधना की ओर अनुभूति करवाते हैं। जो भी आनन्द, शांति, ज्ञान प्राप्त करना चाहता है वह इन धर्म यज्ञों में सहभागी होकर साधना को सीख सकता है। प्रति माह ध्यान केन्द्रों पर यह धर्म यज्ञ आयोजित होते हैं।

अध्यक्षीय

चातुर्मास : आत्मजागरण, साधना और प्रथम आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म. के दीक्षा - दिवस की प्रेरणा

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष
E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय बंधुओं, सादर जय जिनेन्द्र !

आषाढ़ शुक्ल पंचमी का पावन दिवस श्रमण संघ के इतिहास का एक अत्यंत गौरवपूर्ण एवं प्रेरणादायी अध्याय है। इसी पावन तिथि पर विक्रम संवत् 1951 में पंजाब के बनूड़ (पटियाला) की पावन धरती पर पूज्य मुनि श्री सालिग्राम जी महाराज के चरणों में प्रथम आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज ने सांसारिक जीवन का त्याग कर संयम एवं साधना के पथ को अपनाया। यह केवल एक महापुरुष की दीक्षा नहीं थी, बल्कि श्रमण परंपरा में ज्ञान, तप, त्याग और धर्म प्रभावना के एक स्वर्णिम युग का शुभारम्भ था।

भाद्र शुक्ल द्वादशी, विक्रम संवत् 1939 को पंजाब के राहों नगर में लाला श्री मनसाराम जी चोपड़ा एवं श्रीमती परमेश्वरी देवी जी के धार्मिक परिवार में आपका जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही आप गंभीर, शांत, विनम्र एवं अध्यात्म के प्रति अनुरागी थे। संसार की क्षणभंगुरता का अनुभव होते ही आपने संयम जीवन का वरण किया और दीक्षा के पश्चात् विद्या गुरु आचार्य पूज्य श्री मोतीराम जी महाराज के सान्निध्य में आगम, दर्शन एवं शास्त्रों का गहन अध्ययन किया।

पूज्य आत्माराम जी महाराज केवल एक महान संत ही नहीं, बल्कि अद्वितीय विद्वान, कुशल संगठनकर्ता और युगद्रष्टा आचार्य भी थे। लगभग 60 ग्रंथों की रचना कर आपने जैन साहित्य को अमूल्य धरोहर प्रदान की तथा अपने दीर्घ प्रवचन काल में असंख्य श्रद्धालुओं को धर्म, संयम और सदाचार का मार्ग दिखाया। आपने शताधिक साधु-साध्वियों को आगम का अध्ययन कराकर ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया।

आपकी आध्यात्मिक साधना, विद्वत्ता एवं नेतृत्व क्षमता को देखते हुए विक्रम संवत् 2003 में लुधियाना में आपको आचार्य पद से विभूषित किया गया तथा विक्रम संवत् 2009 में सादड़ी में संपूर्ण श्रमण संघ ने आपको "आचार्य सम्राट्" की सर्वोच्च उपाधि से अलंकृत किया। लगभग 67 वर्षों के संयम जीवन में आपने पंजाब, हरियाणा, राजस्थान सहित अनेक क्षेत्रों में पद विहार कर धर्म प्रभावना की अमिट छाप छोड़ी।

इस वर्ष सम्पूर्ण देश में श्रमण संघ के 78 संत चातुर्मास एवं 284 साध्वी चातुर्मास सम्पन्न हो रहे हैं। इस प्रकार कुल 362 चातुर्मास धर्म, साधना, स्वाध्याय एवं आत्मजागरण के दिव्य केंद्र बनकर देशभर में आध्यात्मिक चेतना का प्रकाश फैला रहे हैं। (शेष पृष्ठ 5 में)

सम्पादकीय

आस्था की रक्षा केवल धर्मायतनों से नहीं-पारदर्शिता, शुचिता और उत्तरदायित्व से होगी

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

भारत की आत्मा उसकी आस्था में बसती है। मंदिर, तीर्थ, स्थानक, गुरुद्वारे, मस्जिदें और गिरजाघर केवल पूजा के स्थल नहीं होते, वे करोड़ों लोगों के विश्वास, त्याग और नैतिक मूल्यों के केंद्र होते हैं। जब कोई श्रद्धालु अपनी मेहनत की कमाई, सोना, चाँदी, आभूषण अथवा धनराशि किसी धार्मिक संस्था को समर्पित करता है, तब वह केवल दान नहीं देता, बल्कि अपना विश्वास उस संस्था के हाथों में सौंपता है। इसलिए किसी भी धार्मिक संस्था की सबसे बड़ी पूँजी उसकी संपत्ति नहीं, बल्कि जनता का विश्वास होता है।

हाल के दिनों में अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मभूमि में श्रद्धालुओं द्वारा अर्पित चढ़ावे और बहुमूल्य वस्तुओं के कथित दुरुपयोग से संबंधित समाचार राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बने हैं। विभिन्न समाचार माध्यमों-द टाइम्स ऑफ इंडिया (26–27 जून 2026), द इकोनॉमिक टाइम्स (26 जून 2026), इंडिया टुडे, एनडीटीवी तथा द न्यू इंडियन एक्सप्रेस-में प्रकाशित समाचारों के अनुसार इस मामले में प्राथमिकी दर्ज हुई, कुछ कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई और जाँच एजेंसियाँ अपना कार्य कर रही हैं। न्यायिक प्रक्रिया पूर्ण होने से पहले किसी व्यक्ति या संस्था को दोषी ठहराना उचित नहीं होगा, किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि ऐसी घटनाओं की चर्चा मात्र से करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाएँ आहत होती हैं और अनेक ईमानदार तथा निष्कलंक सेवकों की प्रतिष्ठा भी अनावश्यक रूप से प्रश्नों के घेरे में आ जाती है।

यह विषय किसी एक मंदिर या एक ट्रस्ट का नहीं है। यह पूरे देश की धार्मिक संस्थाओं के लिए आत्ममंथन का अवसर है। धर्म का वास्तविक वैभव केवल स्वर्णमंडित शिखरों या भव्य भवनों में नहीं, बल्कि उसके प्रशासन की निष्कलंकता में निहित होता है।

विशेष रूप से जैन समाज के लिए यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। देशभर में हजारों जैन मंदिर, तीर्थ, स्थानक, उपाश्रय, ज्ञानभंडार, चिकित्सालय, छात्रावास और धर्मार्थ संस्थाएँ पूज्य आचार्यों की प्रेरणा तथा दानदाताओं के त्याग से स्थापित हुई हैं। इन संस्थाओं में समाज की कठिन परिश्रम से अर्जित धनराशि, असंख्य परिवारों की श्रद्धा और संतों की तपःपूत प्रेरणा निहित है। यदि कहीं भी आर्थिक अपारदर्शिता, लापरवाही या व्यक्तिगत स्वार्थ प्रवेश करता है, तो उसकी क्षति केवल धन की नहीं होती, उससे धर्म की प्रतिष्ठा और समाज का विश्वास भी प्रभावित होता है। (शेष पृष्ठ 5 में)

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स
स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप
30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल
परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल
परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल
परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल
परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री रममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल ढल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

समय को सार्थक बनाये चातुर्मास

- युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.

वर्तमान का हमारा जीवनकाल हमें उपलब्ध, ज्ञात काल की सबसे स्थूल ईकाई है। इस समग्र जीवन का अन्त अज्ञात होने से इसका निश्चित रूप समझना सामान्य व्यक्ति के बस में नहीं है। कोई भी व्यक्ति मृत्यु से पूर्व किसी के भी जीवन का निश्चित कालावधि निश्चय से बताने में असमर्थ है। अतः कालावधि के लिये यह मापदण्ड अनिश्चितता के कारण समुचित नहीं होता। उससे कम कालावधि है अवस्था **1.** बाल्यावस्था. **2.** युवावस्था **3.** प्रौढ़ावस्था. **4.** वृद्धावस्था। इन चारों अवस्थाओं के अपने सुनिश्चित कर्तव्य हैं। अधिकतर मनुष्य अपनी अवस्थानुरूप कर्तव्य सम्पन्न करते हैं। तथापि बीस-बाईस वर्षों की एक-एक अवस्था का नियोजन व्यक्ति समुचित रूप से तभी कर सकता है जब वो प्रत्येक अवस्था के एक-एक वर्ष को सार्थक बनाएँ।

तथापि मानवी जीवन के प्रत्येक अवस्था में तथा प्रत्येक वर्ष में कुछ अवसर ऐसे आते हैं जो मानव की दिशा बदल देते हैं, जो मानव के भीतर में छुपी हुई अत्यंत संभावनाओं को प्रकट करने का एक अवसर प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति अधिकांश परम्पराओं द्वारा स्वीकृत, सम्मत ऐसा कालावधि है 'चातुर्मास'। चातुर्मास शब्द में ही इसकी समयावधि स्पष्ट होती है कि जो चार महीने का होता है वह चातुर्मास कहलाता है। चातुर्मास आषाढ महीने से प्रारंभ होकर श्रावण, भाद्रपद, आसो कार्तिक मास तक गतिमान रहता है। चातुर्मास प्रारंभ और समापन भारतीय पंच (कैलेंडर) के अनुसार ही होता है। अंग्रेजी महीने के अनुसार यह प्रायः जुलाई में प्रारंभ होकर नवम्बर तक चलता है।

इस चातुर्मास के सन्दर्भ में आध्यात्मिक जगत् में अनेक धारणाएँ, मान्यताएँ वैष्णव परम्परा के अनुसार चातुर्मास में विश्व की दैवी शक्ति सुप्त होती है। तदनुसार मानव के धार्मिक अनुष्ठानों से यह जगत यह संसार सुरक्षित रहता है। जैन परम्परानुसार चातुर्मास काल में वर्षा की अधिकता से जीवोत्पत्ति अधिक होती है अतः करूणा की दृष्टि से चातुर्मास एक ही स्थान पर व्यतीत करने का विधान है। उसी तरह पर्युषणाकल्प और संवत्सरी की आराधना चातुर्मासकाल में ही होती है इस दृष्टि चातुर्मास काल महत्वपूर्ण है। इसी को लक्ष्य में रखकर अनेक धार्मिक आयोजन, अनुष्ठा चातुर्मास काल में सम्पन्न होते है।

सुज्ञ व्यक्ति चातुर्मास के समय का सदुपयोग करता है। यह समय होता अन्तर्मुख बनने का, अपने भीतर झाँकने का। सभी अनुष्ठान, आराधना का यही प्रमुख उद्देश्य होता है। अपने अनादिकालीन संस्कार तथा बाहरी चकाचौंध के कारण मानव अपने भीतर को जानने का कभी प्रयास ही नहीं करता है। चातुर्मास में प्रार्थना, प्रवचन धर्मचर्चा, धार्मिक कक्षाएँ आदि का संवर, दया, पौषध आदि क्रियाएँ निमित्त बनती है आत्मा को शुद्ध बनाने में। ध्यान साधना आधार है आत्मबोध एवं आत्मशुद्धि का।

चातुर्मास में सांसारिक विशेष कार्यों से निवृत्ति होने के कारण चित्त में व्याकुलता कम रहती है। नियमित व्यापार आदि के अलावा अन्य कार्य विवाह आदि की व्यस्तताएँ चातुर्मास काल में नहीं होती है। संत-सतीगण भी शेषकाल के विहारक्रम को विराम देकर चार महीने के लिये एक स्थान पर रूक जाते हैं। यह समय उनके लिये भी महत्वपूर्ण होता है। स्वाध्याय, साधना तथा ज्ञान-ध्यान के लिये विशेष समय तथा अनुकूलताएँ प्राप्त होती है। स्थान परिवर्तन की समस्या से चार महीने के लिये छुटकारा हो जाता है। विहार का विचार नहीं रहता, आहार के लिये चातुर्मास क्षेत्र में शीघ्र अन्तराय टूटती है। स्थानीय धर्मप्रेमी, श्रद्धालुगण सेवा का लाभ विशेष रूप से ग्रहण करते हैं।

सूक्ष्म, समय को पकड़ना सभी के बस की बात नहीं, लम्बी चौड़ी बातें करना व्यवहार संगत नहीं। इसीलिए चार महीने का सीमित, नियत कालावधि चतुर्विध संघ को साधना के लिये प्राप्त हो रहा है। भव्यात्माएँ इस अवसर का पूरा लाभ उठाकर आत्मबोध, आत्मशुद्धि हेतु पुरुषार्थ करेंगे ऐसा पूर्ण विश्वास है।

चातुर्मास क्यों और कैसे?

- पूज्य श्री उपेन्द्रमुनि जी म.सा.

जैन धर्म में प्रारंभ से ही चातुर्मास करने का प्रावधान है। कारण जीव हिंसा से बचना, क्योंकि काल में हरित वनस्पति के साथ-साथ जीवोत्पत्ति बहुत ज्यादा हो जाती है। वर्षा ऋतु में जहाँ बरसात ज्यादा होती है, जीवोत्पत्ति ज्यादा होती है। कभी वर्षा के कारण ठंड बढ़ जाती है तो कभी भयंकर ऊमस होने के कारण-पौधों में घुसे हुए, घास में धसे हुए जीव भी (सांप-बिच्छु आदि) बाहर निकल आते हैं।

ऐसे में साधक के जीवन को भी खतरा होता है, उनके शरीर में बीमारियाँ बढ़ जाती है। साथ ही बरसात होने पर, बहुत से जीव जो वृक्ष के पत्तों जैसे ही होते हैं। जब वो चलते हैं तो पता चलता है जीव है, रुकते है तो पता नहीं चलता, पत्ते हैं या जीव। बस विवेक के लिए-ताकि अपनी भी सुरक्षा रहे और अपने माध्यम से अन्य जीवों की भी हिंसा न हो। इसी दृष्टि से चातुर्मास करने का भी विधान है।

अहिंसा और विवेक जैन धर्म के प्राण हैं। प्रत्येक कार्य करते समय विवेक रखना, अहिंसा का पालन करना जरूरी है। जरा सा अविवेक भारी हिंसा का, कर्म बंध का कारण बन जाता है। उदाहरण के तौर पर मुखवस्त्रिका का ही विषय ले लो। मुख वस्त्रिका का उपयोग दो तरह से होता है। जीवों की रक्षा के लिए और श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा के चिन्ह रूप में वेष रूप में। मुख वस्त्रिका का विधान-जीव करुणा की दृष्टि से, भाषावर्गणा के पुद्गलों पर विवेक रखना जरूरी होता है, क्योंकि लोक के सभी प्रदेशों में जीव स्थित हैं। मानव जिन स्थानों पर रहता है या घूमता-फिरता है, वहाँ वायु मंडल में एक दो नहीं, असंख्य जीव भरे पड़े हैं। विशेषकर थेकसस नाम के जीव वायुमंडल में पाए जाते हैं। ये जीव इतने सूक्ष्म होते हैं कि सूर्य की नोक पर एक लाख समा सकते हैं। क्योंकि वायु स्वयं भी सजीव है। अतः विवेक रखकर हम असंख्य जीवों की हिंसा से बच सकते हैं।

आवश्यक चूर्णि में लिखा है कि यदि कोई श्रावक बिना मुख वस्त्रिका लगाए सामायिक या पौषध-उपवास अठाई-इत्यादि करता है तो उसे ग्यारह सामायिक का प्रायश्चित आता है। एतदर्थ किसी भी साधक को खुले मुँह नहीं बोलना चाहिए। विवेक और यतना के साथ भाव-पूर्वक मकान को साफ करते-करते, कर्मरज, साफ करते हुए साधु सात या आठ कर्मों की निर्जरा करता है।

निशीथ सूत्र में लिया है-साधु रजोहरण को छोड़कर अपने शरीर प्रमाण से अर्थात शरीर की जितनी लम्बाई है उससे अधिक न जावे-और जाए तो एक उपवास का प्रायश्चित आता है। प्रायश्चित प्रमाद एवं विस्मृति के दोष से बचकर आगे के लिए सदा सावधान रहने के लिए कहा है।

रात्रि भोजन नहीं करने की प्रेरणा भी इसीलिए दी है। चातुर्मास काल में तो मच्छरादि क्षुद्र जीवों की विशेष उत्पत्ति हो जाती है। एक आढ़ती श्रावक ने कहा कि मैं रात्रि में भोजन कर रहा था, चातुर्मात काल था, फर्राटा लगाया हुआ था। कहता कि मुझे सब्जी की कटोरी में कुछ हिलता दिखाई दिया, ध्यान से रोशनी में देखा तो जीरा मच्छर सब्जी में पड़े हुए उड़ने की कोशिश कर रहे हैं, उसी दिन से उन्होंने रात्रि भोजन का त्याग कर दिया। योग्य श्रावकों को रात में घर के बाहर की लाईटें नहीं जलानी चाहिए, क्योंकि यहाँ बहुत सारे कीड़े एकत्रित हो जाते हैं, परिणाम स्वरूप जीव का जीव बैर लोकोक्ति के अनुसार वो जीवों द्वारा भक्षण कर लिए जाते हैं। अतः चातुर्मास हिंसा से बचने के लिए, विशेष धर्माराधना के लिए, स्वाध्यादि कारणों को ध्यान में रखते किया जाता है।

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES POLUR
vamalaya POLUR
JAIN PETRO
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

विजय का गर्वोल्लास

भरत, आदि पुरुष ऋषभदेव के पुत्र थे। उनके अन्य पुत्र भी राजा थे। ऋषभदेव मुनि बने तो सभी पुत्रों को अलग-अलग भूखण्ड का अधिपति बना दिया था। सभी पुत्र अपने-अपने क्षेत्र में सुखपूर्वक राजसत्ता को भोग रहे थे। भरत अपने भाइयों में ही नहीं, छह खण्ड के अन्य भूपतियों में भी अपनी अलग पहचान बनाना चाहते थे। इसके लिये उन्होंने चक्र प्रवर्तन किया। छहों भूखण्डों पर विजय प्राप्त की। अंत में विचार किया-मैं चक्रवर्ती तो बन चुका हूँ। इस समय जीवित सभी राजा मेरे आधीन हो चुके हैं। मुझे चक्रवर्ती स्वीकार कर चुके हैं। पर मात्र इतना ही मेरे चक्रवर्तित्व के लिए पर्याप्त नहीं है। वर्तमान मेरे अजेय पौरुष से परिचित हो और भविष्य उस पौरुषबोध से अभिज्ञ रहे, यह ठीक नहीं। भविष्य में होने वाले राजा भी मेरे पौरुष का लोहा मानें, ऐसा कालजयी, कालातीत कुछ करना चाहिए। फलतः भरत अन्तिम सीमा पर स्थित ऋषभकूट पर्वत पर अपने सेवकों के साथ पहुँचे। ऋषभकूट पर्वत की सर्वोच्च शिला पर वे अपने चक्रवर्तित्व की विजय की प्रशस्ति अंकित करना चाहते थे।

सेवकों ने कहा-महाराज, यहाँ एक इंच भी स्थान खाली नहीं है। आपसे पहले होने वाले चक्रवर्तियों के अंतर्मन में भी अपने को अमर कर देने का भाव जन्म ले चुका था। उन्होंने अपने-अपने प्रशस्ति पत्र पहले ही शिलांकित किये हुए हैं। भरत का अहं जाग उठा। वह बोले-इतने बड़े ऋषभकूट पर्वत पर मेरा नामांकन करने के लिए कोई स्थान खाली नहीं है। जाओ ! किसी एक चक्रवर्ती का नाम मिटा कर मेरा नाम अंकित कर दो।

चक्रवर्ती का आदेश था। सेवकों ने एक चक्रवर्ती का नाम मिटा दिया और वहाँ पर भरत चक्रवर्ती का नाम उत्कीर्णित कर दिया। क्षण भर को भरत का मस्तिष्क विजय गर्व से और भी उन्नत हो गया। इसके बाद भरत अपने महलों में लौट आए। परन्तु उनका अन्तर्मन सहसा अनंत आत्मपीड़ा से दहक उठा। वह सोचने लगे-भरत! तेरा यह अभिमान कितना झूठा, निष्प्रयोजन व व्यर्थ है! तू ऋषभकूट पर अपना नाम अंकित करवा कर समझ रहा है कि मैं अमर हो गया। भरत, तेरा यह सब सोचना एकदम अर्थहीन है। इस संसार में तेरे से पहले कितने चक्रवर्ती हुए हैं। एक का नाम मिटा कर तूने अपना नाम तो लिखवा दिया है पर इतने काम से भविष्य तेरे नाम से परिचित नहीं हो सकता। एक दिन ऐसा आएगा जब तेरा नाम भी काल-शिला से ऐसे ही मिटा कर अपना नाम लिखवा लिया जाएगा जैसे तूने दूसरे का नाम मिटा कर अपना लिखवाया है।

उस शिला पर तू अपना नाम क्यों अंकित नहीं करता जिस शिला पर भगवान ऋषभ ने अपने को स्वयं उत्कीर्णित किया है। वहाँ किसी के हाथ ही नहीं पहुँच पाएंगे। वहाँ नया लिखने का और पुराना मिटा देने का सिलसिला नहीं चलता है। भरत ने अमर होने का कालपात्र गाड़ने या शिलांकन करवाने की दोबारा भूल करने का विचार त्याग दिया। अंततः भरत ने भी भगवान ऋषभदेव के संयम पथ को स्वीकार कर सच्चे अर्थों में सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान प्राप्त किया। उस अदृश्य भित्ति पर अंकित शिला-लेख के कारण ही संसार भरत को आज तक याद कर रहा है। अनंत उत्सर्पिणी और अनंत अवसर्पिणी काल बीत जाने के बाद भी भरत को याद किया जाता रहेगा।

चार महीने में बदल सकती है आपकी दशा और दिशा

– उप-प्रवर्तक पू. श्री अमृत मुनि जी म.

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा बीरबल बारह में से चार चले जाए तो शेष कितने रहेंगे। यह सुनकर बीरबल ने कहा शहंशाह बारह में से चार चले जाए तो कुछ भी नहीं बचेगा। यह सुनकर अकबर ने कहा बीरबल तुम हमेशा मेरे प्रश्नों का उल्टा सीधा उत्तर देते हो। बारह में से चार चले जाने पर कैसे कुछ नहीं बचेगा। बीरबल बोला शहंशाह साल में बारह महीने होते हैं, उनमें चार महीने बरसात के होते हैं, यदि चार महीनों में बरसात ना हो तो भला आठ महीनों में क्या कुछ होगा। ताल तलैया सूखी रह जाएँगी, नदियाँ प्यासी रह जाएँगी, किसानों के कुछ पैदा नहीं होगा। व्यापारी व्यापार नहीं कर पाएंगे, इसलिए बारह महीनों में बरसात के चार महीने ही महत्वपूर्ण हैं। अकबर को बीरबल की बात बहुत पसंद आयी और कहा तुम सत्य कह रहे हो। वास्तव में यही चार महीनें संसार में हर किसी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

सामाजिक आर्थिक जीवन में जिस प्रकार सावन, भादव, असोज, कार्तिक इन चार महीनों का महत्व है वही अध्यात्म के क्षेत्र में भी इन चार महीनों का अति महत्वपूर्ण स्थान है। यही चार महीने चातुर्मास के कहे जाते हैं। किसान को इन चार महीनों में अच्छी फसल पैदा होने की आशा रहती है। व्यापारी को भी इन चार महीनों में व्यापार में कुछ विश्राम मिलता है। साधु-संत भी इन चार महीनों में एक स्थान पर ठहर करके धर्म की आराधना करते हैं।

वर्षा होने से प्रकृति भी शीतल हो जाती है। अध्यात्म के क्षेत्र में धर्म आराधना करने वाले इन चार महीनों में व्रत, तप, भक्ति की साधना करते हैं। इन दिनों संत-सती भी एक स्थान पर ठहर कर धर्म की आराधना करते हैं। धर्म की आराधना करने से मनुष्य की मानसिक स्थिति अनुकूल और संतुलित रहती है। इससे हमारा जीवन अनुकूल बनता है साथ ही साधना से सिद्धि की प्राप्ति होती है।

भारत के जैन ही नहीं बल्कि अन्य धर्मों में भी चातुर्मास का वैसा ही महत्व दर्शाया गया है, जिसमें सभी आधिकाधिक धर्म साधना करते हैं। इसके पीछे यह भी कारण है कि वर्षा ऋतु में ऋतु परिवर्तन होता है। प्रकृति में अनेक कीटाणु और विषाणु मक्खी मच्छर बढ़ जाते हैं, कई बार गंभीर रोगों की भी संभावना बढ़ जाती है। दूसरा कारण यह है कि प्रकृति का तेज वर्षा होने से एकाएक ठंडा हो जाता है। ऐसे में हमारे शरीर में कई प्रकार की विकृतियाँ पैदा हो सकती है ऐसे में हम अपने भीतर के भावनात्मक विकारों को जप-तप की साधना से दूर कर सकते हैं और करना भी चाहिए। बेवजह इन चार महीनों में यात्रा से बचना चाहिए। खाने-पीने में विशेष ध्यान रखना चाहिए। जहाँ तक हो सके तली हुई चीज, दही, दूध, पत्तों की सब्जियाँ, बेंगन, प्याज, लहसुन आदि का त्याग हमारे शरीर के लिए हितकर होता है। धर्म साधना की ओर लगे व्यक्ति को इनसे बचना चाहिए।

नियमित धर्म साधना करने से शरीर में ऊर्जा का संचय होता है। यदि हम व्रत, तपस्या न कर पाए तो मौन व्रत रखकर आत्म कल्याण की ओर अग्रसर हो सकते हैं। धर्म साधना में लगे हुए मानव के लिए प्रतिदिन सुबह प्रार्थना, दिन में महापुरुषों का सत्संग एवं संध्या को प्रतिक्रमण करना उत्तम होता है। यदि हम चार माह तक संत-सती के प्रवचन सुनकर उन्हें जीवन में उतारेंगे तो अवश्य ही हम सफलता के शिखर को छू पाएंगे।

जैन धर्म में पर्वराज पर्युषण का अत्यधिक महत्व है। चातुर्मास में आठ दिन तक चलने वाला यह पर्व सांवत्सरिक क्षमापना के साथ पूर्ण होता है। जिसमें सभी धर्मावलंबी संसार के सभी जीवों से क्षमा याचना करते हुए उनके प्रति प्रेम, दया, करुणा व मैत्री का भाव दर्शाते हैं। इन चार महीनों में श्रावक साधु-संतों की सेवा करते हुए आत्म-कल्याण की भावना जागृत करते हैं। जैन धर्म में वर्षाकाल का बहुत महत्व है। वर्षाकाल में बरसात के कारण मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। सामाजिक कार्य भी नहीं किए जाते हैं। प्रकृति में जीव-जंतुओं की बहुतायत से वृद्धि हो जाती है इस कारण जीवों की रक्षा के साथ देव, गुरु और धर्म की आराधना हेतु वर्षाकाल को श्रेष्ठ बताकर साधना पर बल दिया गया है। यह समय संयम भाव बढ़ाने का बहुत ही सुनहरा अवसर देता है।

भगवान महावीर ने भी अपना अंतिम चातुर्मास पावापुरी में किया वहीं उन्होंने गौतम से कहा समयं गोयम मा पमायए अर्थात् हे गौतम क्षण मात्र का भी प्रमाद मत करो। भगवान का यह संदेश मानव मात्र को दिया गया संदेश है। आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है इसलिए जिसमें प्रगति करने की भावना है, ललक है तो उसे आलस्य या प्रमाद को त्याग देना चाहिए। चातुर्मास धर्म आराधना के लिए बहुत ही अनुकूल होता है। इसमें एक ओर जहाँ व्यक्ति आत्मा का विकास करता है वही यह सामाजिक समरसता को बढ़ाने वाला समय है। इन चार महीनों में हम अपनी दुष्प्रवृत्तियों का त्याग कर शुभ प्रवृत्तियों की ओर मुड़कर देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा का भाव बढ़ाये। हर पल धर्माचरण करते हुए मानव भव को सफल बनाने का प्रयास करें, अगर हम ऐसा कर पाते हैं तो हम जीवन में सदैव आत्मोन्नति कर सभी तरह की सफलताओं को प्राप्त कर पाएंगे।

धर्म की आत्मा : भाव या भव्यता ?

– डॉ. सुधीर हरबंसलाल जैन-राष्ट्रीय मंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस, कोटा

"धर्म का मूल्य उसके मंच की ऊँचाई, पांडाल की विशालता अथवा व्यय की मात्रा से नहीं, बल्कि श्रद्धा, विनम्रता और आत्मशुद्धि के भावों से आँका जाता है। जहाँ भाव की पवित्रता है, वहीं धर्म की वास्तविक गरिमा है।" धार्मिक आयोजनों की भव्यता समाज में उत्साह, श्रद्धा और सहभागिता का वातावरण निर्मित करती है। सुंदर व्यवस्थाएँ, विशाल आयोजन और सामूहिक उपस्थिति अपने आप में अनुचित नहीं हैं, वे श्रद्धा की स्वाभाविक अभिव्यक्ति भी हो सकते हैं।

किन्तु विचारणीय प्रश्न तब उत्पन्न होता है जब भव्यता, भाव पर हावी होने लगती है। जब चर्चा श्रद्धा से अधिक खर्च की होने लगे, साधना से अधिक व्यवस्थाओं की होने लगे और धर्म का मूल्य उसकी सादगी के बजाय उसकी चमक-दमक से आँका जाने लगे, तब आत्ममंथन आवश्यक हो जाता है। जैन दर्शन स्पष्ट रूप से बताता है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप बाह्य आडंबर में नहीं, अपितु अंतःकरण की निर्मलता में निहित है। एक निष्कपट प्रार्थना, विनम्र सेवा, संयममय जीवन और पवित्र भाव का महत्व किसी भी भव्य प्रदर्शन से कहीं अधिक है।

भव्यता तब तक शोभायमान है, जब तक वह भाव की अभिव्यक्ति बनी रहे। किन्तु यदि वह प्रतिस्पर्धा, प्रतिष्ठा या प्रदर्शन का साधन बन जाए, तो धर्म का मूल उद्देश्य धूमिल होने लगता है। धर्म आत्मोत्कर्ष का मार्ग है, आत्मप्रदर्शन का नहीं। अतः आवश्यकता भव्यता के विरोध की नहीं, बल्कि इस बात की है कि धर्म का केंद्र सदैव भाव, विनम्रता, समर्पण और आत्मशुद्धि ही बना रहे।

स्मरण रहे : "व्यवस्थाएँ धर्म को सजाती हैं, किन्तु भाव उसे आडंबर बनाते हैं। आडंबर आकर्षित कर सकता है, परंतु आत्मा को स्पर्श केवल श्रद्धा और समर्पण ही करते हैं।"

मंगल चिंतन : "द्रव्य से अधिक भाव की महिमा है, प्रदर्शन से अधिक समर्पण की गरिमा है। धर्म वहीं जीवित है जहाँ विनम्रता, करुणा और आत्मजागरण का प्रकाश है।"

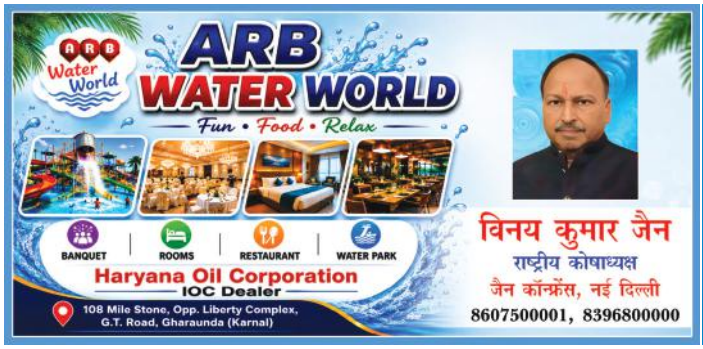

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 25

ऊर्जा का सिर में अटक जाना

(गहन विस्तार)

जब जीवन अत्यधिक विचारमय हो जाता है, जब हर परिस्थिति विश्लेषण, योजना और चिंता में बदल जाती है, तो ऊर्जा धीरे-धीरे ऊपर की ओर केंद्रित होने लगती है। सिर भारी, विचार तेज, नींद हल्की, शरीर से दूरी, यह अवस्था सामान्य मानी जाती है, पर वास्तव में यह असंतुलन है। ऊर्जा का सिर में अटक जाना प्रमाद की एक गहरी अवस्था है।

1. विचारों की अधिकता : मन का स्वभाव सोचना है। परंतु जब सोच अनवरत हो जाए, तो वह ऊर्जा को खींच लेती है। व्यक्ति वर्तमान में कम और विचारों में अधिक रहता है। योजना, कल्पना, विश्लेषण-सब आवश्यक हो सकते हैं, पर जब वे निरंतर हों, तो संतुलन टूट जाता है।

2. सिर में केंद्रित जीवन : जब ऊर्जा ऊपर केंद्रित रहती है, तो व्यक्ति शरीर से कटने लगता है। वह महसूस कम करता है, सोच अधिक करता है। भावों को समझने की बजाय उनका विश्लेषण करता है। यह बुद्धि की प्रधानता है, पर अनुभव की कमी।

3. नियंत्रण और विचार : नियंत्रण की जिद विचारों को बढ़ाती है। "यदि ऐसा हुआ तो?", "यदि वैसा हुआ तो?", "मुझे पहले से सब तय करना है।", यह भविष्य-चिंता, ऊर्जा को नीचे उतरने नहीं देती। नाभि और मूलाधार कमजोर पड़ते हैं। सिर भारी होता जाता है।

4. शरीर से दूरी : जब व्यक्ति लगातार सिर में रहता है, तो शरीर संकेत देता है-गर्दन में जकड़न, आँखों में थकान कंधों में तनाव, नींद में बाधा, यह संकेत है कि ऊर्जा संतुलित नहीं है।

5. आध्यात्मिक भ्रम : कभी व्यक्ति सोचता है कि अधिक विचार या विश्लेषण गहरी समझ का संकेत है। परंतु वास्तविक समझ शांत होती है। यदि विचारों की गति कम नहीं हो रही, तो संभव है कि ऊर्जा अभी भी ऊपर अटकी हुई है।

6. ऊर्जा का अवरोहण : ऊर्जा को नीचे लाने का प्रयास बल से नहीं, ध्यान से होता है। श्वास को धीरे-धीरे पेट तक ले जाएँ। चलते समय पैरों को महसूस करें। बैठते समय धरती का स्पर्श महसूस करें। धीरे-धीरे ऊर्जा सिर से उतरने लगती है।

7. अनुभव बनाम विश्लेषण : जब कोई भाव उठे, तो तुरंत उसे समझने की कोशिश न करें। पहले उसे महसूस करें। यदि आहत हैं-तो विश्लेषण से पहले अनुभव करें। यदि भय है-तो उसके कारण से पहले उसकी उपस्थिति स्वीकार करें। यह प्रक्रिया ऊर्जा को संतुलित करती है।

8. संतुलित बुद्धि : बुद्धि आवश्यक है। पर बुद्धि संतुलित होनी चाहिए। जब बुद्धि शरीर और श्वास से जुड़ी हो, तो निर्णय स्पष्ट होते हैं और तनाव कम रहता है। जब बुद्धि अलग हो जाए, तो जीवन सिर में कैद हो जाता है।

9. सिर से हृदय और नाभि तक : ऊर्जा का स्वाभाविक प्रवाह है-सिर से हृदय, हृदय से नाभि, नाभि से मूलाधार यह अवरोहण स्थिरता लाता है। जब यह प्रवाह बाधित हो, तो व्यक्ति असंतुलित अनुभव करता है।

10. अंतिम स्पष्टता : ऊर्जा का सिर में अटक जाना प्रमाद की आधुनिक अभिव्यक्ति है। अत्यधिक विचार, निरंतर विश्लेषण, भविष्य-चिंता-ये सब ऊर्जा को ऊपर बाँध देते हैं। जब श्वास नाभि से जुड़ती है और सजगता शरीर में उतरती है, तो ऊर्जा संतुलित होती है। अगले अध्याय में हम प्रवेश करेंगे-श्वास के माध्यम से वर्तमान के द्वार में।

(क्रमशः)

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला...

भारतीय अभिलेखों के मर्मज्ञ और जैन इतिहास के अप्रतिम अन्वेषक : बेंजामिन लुईस राइस का अविस्मरणीय अवदान

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

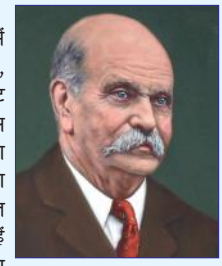

भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में जिन विदेशी विद्वानों ने अपने श्रम, शोध और निष्पक्ष दृष्टि से अमिट योगदान दिया, उनमें बेंजामिन लुईस राइस (Benjamin Lewis Rice) का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। कर्नाटक के अभिलेखों के व्यवस्थित संकलन और प्रकाशन के कारण उन्हें "कर्नाटक अभिलेखों का पितामह" कहा जाता है। विशेष रूप से जैन धर्म के इतिहास, उसकी सांस्कृतिक परंपरा, राजाश्रय तथा साहित्यिक वैभव को प्रमाणिक आधार प्रदान करने में राइस का योगदान अनुपम है। आज जैन धर्म के इतिहास पर होने वाला कोई भी गंभीर अध्ययन उनके द्वारा संकलित अभिलेखों और प्रकाशित ग्रंथों के बिना पूर्ण नहीं माना जा सकता।

बेंजामिन लुईस राइस का जन्म 17 जून 1837 को बेंगलुरु में हुआ। उनके पिता रेवरेण्ड बेंजामिन होल्ट राइस स्वयं एक विद्वान एवं शिक्षाविद थे, जिनके संस्कारों का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर स्पष्ट दिखाई देता है। प्रारम्भ से ही इतिहास, भाषाओं और प्राचीन संस्कृति के प्रति उनकी गहरी रुचि थी। आगे चलकर उन्होंने मैसूर राज्य के शिक्षा विभाग के निदेशक तथा पुरातत्त्व विभाग के प्रथम निदेशक के रूप में कार्य करते हुए दक्षिण भारत की पुरातात्त्विक धरोहर के संरक्षण को अपना जीवन-ध्येय बना लिया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारत के प्राचीन इतिहास के अनेक स्रोत उपेक्षा के कारण नष्ट होने की स्थिति में थे, तब राइस ने कर्नाटक के गाँव-गाँव, पर्वतों, मंदिरों और जैन तीर्थों का व्यापक सर्वेक्षण आरम्भ किया। इस कठिन अभियान के दौरान उन्होंने लगभग नौ हजार से अधिक अभिलेखों का अन्वेषण, प्रतिलेखन और संपादन किया। इनमें बड़ी संख्या जैन धर्म से संबंधित शिलालेखों की थी, जिन्होंने दक्षिण भारत में जैन धर्म के उत्कर्ष, उसके राजकीय संरक्षण तथा सामाजिक प्रभाव को प्रमाणित किया।

राइस का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य "एपिग्राफिया कार्नाटिका" (Epigraphia Carnatica) का संपादन है। बारह विशाल खंडों में प्रकाशित यह ग्रंथ भारतीय अभिलेख-विज्ञान की आधारभूत कृतियों में गिना जाता है। इन खंडों में गंग, कदंब, राष्ट्रकूट, होयसल तथा अन्य राजवंशों के असंख्य अभिलेख प्रकाशित किए गए हैं। इन अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि दक्षिण भारत में जैन धर्म केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं था, बल्कि वह राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक और साहित्यिक जीवन का भी एक महत्वपूर्ण आधार था। जैन मुनियों, भट्टारकों, बसदियों, दानपरंपरा और जैनाचार्यों के प्रभाव का जो विस्तृत चित्र इन अभिलेखों से प्राप्त होता है, वह भारतीय इतिहास के लिए अत्यंत मूल्यवान है।

श्रवणबेलगोला के इतिहास को विश्व-पटल पर प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी बहुत सीमा तक राइस को ही जाता है। सन् 1889 में प्रकाशित उनकी प्रसिद्ध कृति "श्रवणबेलगोला के अभिलेख" ने इस महान जैन तीर्थ की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा को नई पहचान दी। उन्होंने अभिलेखीय प्रमाणों के आधार पर आचार्य भद्रबाहु और सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के दक्षिण भारत आगमन तथा श्रवणबेलगोला से जुड़े ऐतिहासिक प्रसंगों को सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। इस कार्य ने जैन इतिहास के अनेक महत्त्वपूर्ण अध्यायों को प्रमाणिक आधार प्रदान किया।

राइस का योगदान केवल अभिलेखों तक सीमित नहीं था। उन्होंने प्राचीन कन्नड़ साहित्य, विशेषकर जैन कवियों द्वारा रचित ग्रंथों के अध्ययन और संरक्षण में भी उल्लेखनीय कार्य किया। आदिकवि पम्प, रन्न, नागचंद्र तथा अन्य जैन साहित्यकारों की कृतियों के ऐतिहासिक महत्त्व को उन्होंने रेखांकित किया। उनके प्रयासों के कारण प्राचीन कन्नड़ जैन साहित्य अंतर्राष्ट्रीय विद्वत् जगत के अध्ययन का विषय बना।

विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि राइस ने अपने शोध में किसी प्रकार के पूर्वाग्रह को स्थान नहीं दिया। उन्होंने अभिलेखों को ही इतिहास का सबसे विश्वसनीय साक्ष्य मानते हुए निष्पक्षता और वैज्ञानिक पद्धति से उनका अध्ययन किया। यही कारण है कि आज भी भारतीय इतिहास, कर्नाटक अध्ययन और जैन इतिहास के शोधकर्ता उनके कार्यों को अत्यंत विश्वसनीय स्रोत के रूप में स्वीकार करते हैं।

जैन दर्शन के विदेशी विद्वानों की श्रृंखला में बेंजामिन लुईस राइस का स्थान इसलिए अत्यंत विशिष्ट है कि उन्होंने स्वयं जैन धर्म का अनुयायी न होते हुए भी उसके इतिहास, संस्कृति और साहित्य के संरक्षण में आजीवन उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके अथक परिश्रम ने जैन धर्म की प्राचीनता और गौरवशाली परंपरा को अभिलेखीय प्रमाणों के माध्यम से स्थायित्व प्रदान किया। यदि उनके द्वारा किए गए सर्वेक्षण, संपादन और प्रकाशन उपलब्ध न होते, तो कर्नाटक के जैन इतिहास का एक विशाल अध्याय संभवतः आज भी अज्ञात रहता।

भारतीय इतिहास और जैन अध्ययन के क्षेत्र में बेंजामिन लुईस राइस का नाम सदैव श्रद्धा और सम्मान के साथ स्मरण किया जाएगा। उन्होंने अपने अनुसंधान से यह सिद्ध कर दिया कि सत्यनिष्ठ विद्वत्ता की कोई राष्ट्रीय सीमा नहीं होती, ज्ञान और इतिहास की सेवा ही किसी भी शोधकर्ता की सबसे बड़ी पहचान है। उनके द्वारा सुरक्षित की गई यह विरासत आज भी जैन इतिहास के शोधकर्ताओं के लिए एक अमूल्य निधि बनी हुई है।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

चातुर्मास में बदलेगा जीवन : जैनम जयति शासनम्

- नरेश बोहरा जैन, मुंबई-राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन, जैन कॉन्फ्रेंस

चातुर्मास 29 जुलाई से प्रारंभ होंगे। आप सभी की आध्यात्मिक कुशलता बनी रहे - हार्दिक मंगल कामनाये। जिन धर्म की खूब प्रभावना हो। सभी मुनिवर को हमारी वंदना एवं सुख-साता की कामना करते है।

जैन धर्म में चातुर्मास का अत्याधिक महत्व है। चातुर्मास काल सदैव आध्यात्मिक वातावरण और अच्छे विचार परिवर्तन का अवसर प्रदान करते है। जिस प्रकार बादल की सार्थकता बरसने में है, पुष्प की सुगंध में तथा सूर्य की सार्थकता रोशनी में है उसी प्रकार चातुर्मास की सार्थकता परिवर्तन में है। इस चातुर्मास के दौरान संत और साध्वी के साथ लोग व्रत, तप व साधना करेंगे। वे धर्मावलंबियों को नियमित सत्य, अहिंसा और संयम का मार्ग बताएँगे। उनके प्रवचन का लाभ जैन समाज सहित अन्य लोग भी ले सकेंगे।

चातुर्मास में तो संत प्रवचन देते है इसके बावजूद यदि आपके जीवन में परिवर्तन की सफलता न मिले तो उसका कारण अपने अंदर खोजना होगा। यह तलाश हम सभी अपने अंदर करें की गड़बड़ी कहा हुई। प्रवचन केवल समय बिताने का माध्यम नहीं बल्कि भगवान महावीर, आचार्य भगवन्तों का पवित्र संदेश विस्तार है। सभी चारित्रिक आत्माएँ भगवान महावीर का संदेश आप तक पहुँचाने पग-पग चलकर आपके पास आये हैं। प्रवचनों में खासतौर पर सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, व्यसन मुक्ति, जीवन विज्ञान, ब्रह्मचर्य आदि को जीवन में अपनाने के उपाय बताए जाएँगे। भारत की भूमि धर्म के लिहाज से बहुत ही उर्वरा है और मुझे उम्मीद है हम सभी जैन, सच्चे अनुयायी की तरह चातुर्मास काल का लाभ लेकर परिवर्तन के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

संध्या के समय प्रतिक्रमण होगा। इसमें श्रद्धालु हिंसात्मक कर्मों के लिए ईश्वर से क्षमा याचना करते हैं। जैन धर्म के अनुसार जब व्यक्ति अपनी दिनचर्या के दौरान भावना या कर्म से किसी के अधिकारों का अतिक्रमण कर लेता है तो शाम को वह क्षमा याचना करता है, जिसे प्रतिक्रमण कहा जाता है। कठिन तपस्या करके जैन समाज के लोग चातुर्मास काल में अपने द्वारा जीवन में किए गए भूलों को सुधार कर जीवन को मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जाएँगे।

परिवर्तन किसका ? परिवर्तन करना है बुराई का अच्छाई में, नफरत का प्रेम में, अधर्म का धर्म, हिंसा का अहिंसा, झूठ का सत्य में, हमें निर्जरा करनी है। हमें सत्य का लोप करना है, मोह-माया को त्याग यह चार महीना कुछ धर्म कर्म कमा ले मनवा... सुखी हो जाएगा।

चातुर्मास

- महेश नाहटा जैन, नगरी (छत्तीसगढ़)

महापुरुषों की अमृत वाणी सुनने का अवसर है चातुर्मास, जीवन का पावन परिवर्तन है-चातुर्मास। आत्मा की जागृति का अच्छा अवसर है चातुर्मास। आत्म निरीक्षण का शुभ नाम है चातुर्मास। निज भान के परीक्षण का नाम है चातुर्मास। जीव के स्वात्म अवलोकन का नाम है चातुर्मास। शुद्धात्म भाव को प्रकट करने की ललक का सुअवसर है चातुर्मास। आत्मा के अंधेरे को दूर करने का प्रयत्न है चातुर्मास। नाव रूपी प्रकाश को प्रकट करने का नाम है चातुर्मास। आत्मा को नई राह दिखाने का नाम है चातुर्मास। चिंतन की धारा में बहने का पावन अवसर है चातुर्मास। विभाव को रोककर स्वभाव में रमने का नाम है चातुर्मास। परमात्मा की ओर बढ़ने का पावन अवसर है चातुर्मास। बर्हिमुखी से अंतर्मुखी बनने का शुभ अवसर है चातुर्मास। अंतर शक्ति को जगाने का नाम है चातुर्मास। विनाशी से अविनाशी बनने की यात्रा का नाम है चातुर्मास। साधना की गहराई में जाने का अवसर है चातुर्मास। आत्म अनुभूति का स्पन्दन है चातुर्मास। आत्म शुद्धि के सर्वश्रेष्ठ साधन का नाम है चातुर्मास। इंद्रियों को वश में करने का नाम है चातुर्मास। कषायों पर विजय प्राप्त करने का नाम है चातुर्मास। साधुओं का विशेष कल्प है चातुर्मास। तप के द्वारा कर्म निर्जरा का अवसर है चातुर्मास स्वः पर कल्याण की साधना में बढ़ने का नाम है चातुर्मास।

चातुर्मास : आत्मजागरण का पावन पर्व

- प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर-कर्नाटक प्रांतीय अध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

चातुर्मास केवल ऋतु परिवर्तन का नाम नहीं, बल्कि आत्मपरिवर्तन का संदेश है। जैन धर्म में चार महीनों को संयम, साधना और आत्मचिंतन का सर्वोत्तम काल माना गया है। वर्षा ऋतु में जैन साधु-साध्वियाँ एक स्थान पर विराजमान रहकर तप, स्वाध्याय और धर्मप्रभावना करते हैं, वहीं श्रावक-श्राविकाएँ भी अपने जीवन में संयम, उपवास, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय और सदाचार का संकल्प लेकर आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं।

आज जब जीवन भागदौड़, तनाव और भौतिक आकर्षणों से घिरा हुआ है, तब चातुर्मास हमें ठहरकर स्वयं को देखने, अपने दोषों को पहचानने और जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा देता है। यदि हम इन चार महीनों में अपने किसी एक दुर्गुण का त्याग और एक सद्गुण को स्वीकार कर लें, तो यही चातुर्मास की सच्ची साधना होगी।

(पृष्ठ 1 का शेष 'अध्यक्षीय') वर्तमान में श्रमण संघ में 214 पूज्य साधुवृन्द एवं 961 पूज्य साध्वीवृन्द, कुल 1175 संयमी आत्माएँ, भगवान महावीर के अहिंसा, संयम, करुणा और आत्मकल्याण के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए निरंतर पद विहार एवं धर्मप्रभावना में संलग्न हैं। यह केवल श्रमण संघ का गौरव नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जैन समाज की अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर है। चातुर्मास केवल संत-साध्वियों के एक स्थान पर विराजने का समय नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, स्वाध्याय, तप, त्याग, क्षमा, साधना और जीवन-मूल्यों के पुनर्जागरण का अनुपम अवसर है। यह वह काल है जब प्रत्येक श्रावक-श्राविका अपने जीवन को धर्ममय बनाने, कषायों को क्षीण करने तथा आत्मिक उन्नति की दिशा में एक नया संकल्प ले सकता है। यदि हम इन चार महीनों में अपने जीवन में संयम, सदाचार, नियमित स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण और सेवा के संस्कारों को सुदृढ़ कर लें, तो यही चातुर्मास की वास्तविक साधना होगी।

आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज का दीक्षा दिवस केवल स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी पर्व है। आइए, इस पावन अवसर पर हम यह संकल्प लें कि अपने जीवन में संयम, स्वाध्याय, विनम्रता, सेवा और सदाचार को स्थान देंगे तथा महापुरुषों के आदर्शों को केवल पढ़ेंगे नहीं, बल्कि अपने आचरण में भी उतारेंगे।

प्रथम आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में कोटिशः वंदन करते हुए मैं समस्त श्रमण संघ के पूज्य संत-साध्वीवृन्द के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धा व्यक्त करता हूँ तथा देश-विदेश में विराजमान सभी श्रद्धालुओं को पावन चातुर्मास पर्व 2026 की हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। यह चातुर्मास हम सभी के जीवन में आत्मजागरण, धर्मध्यान, सद्भाव, संयम और आध्यात्मिक उन्नति का नवीन प्रकाश लेकर आए, यही मंगल भावना...

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय') किन्तु सौभाग्य से भारत में अनेक ऐसे आदर्श भी हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि धार्मिक संस्थाएँ यदि सेवा, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को अपना आधार बना लें, तो वे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती हैं। राजस्थान का श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र, जहाँ जैन समाज के साथ-साथ मीणा समाज सहित अनेक समुदायों की गहरी आस्था जुड़ी हुई है, वर्षों से अनुशासित और सुव्यवस्थित प्रबंधन का उदाहरण प्रस्तुत करता रहा है।

इसी प्रकार कर्नाटक का धर्मस्थल तीर्थ पूरे भारत के लिए एक अनुकरणीय मॉडल है। जैन धर्माधिकारी परिवार के संरक्षण में संचालित इस संस्थान ने डॉ. डी. वीरेन्द्र हेग्गड़े के नेतृत्व में धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य, अन्नदान, ग्रामीण विकास और सामाजिक सेवा का जो अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया है, वह बताता है कि धार्मिक ट्रस्ट केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं होते, बल्कि राष्ट्र निर्माण के सशक्त माध्यम भी बन सकते हैं। दक्षिण भारत के जैन तीर्थ-श्रवणबेलगोला, मूडबिद्री तथा अनेक प्राचीन संस्थाएँ-भी अनुशासित प्रशासन, व्यवस्थित लेखा-व्यवस्था और सामाजिक उत्तरदायित्व के कारण जनविश्वास की मिसाल बनी हुई हैं।

जैन समाज की सेवा-परंपरा भी किसी परिचय की मोहताज नहीं है। महाराष्ट्र के अहमदनगर स्थित आचार्य आनंदऋषिजी हॉस्पिटल एंड मेडिकल रिसर्च सेंटर अत्यंत रियायती दरों पर आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध कराकर, निर्धन एवं जरूरतमंद रोगियों की सेवा करके यह सिद्ध कर रहा है कि धार्मिक प्रेरणा का सर्वोच्च रूप मानव सेवा है। इसी प्रकार भारतीय जैन संघटना (BJS) ने बाढ़, भूकंप, सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाओं में राहत एवं पुनर्वास, शिक्षा, जल-संरक्षण और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करके यह प्रमाणित किया है कि धर्म का सच्चा स्वरूप सम्पूर्ण मानवता की सेवा में निहित है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि धार्मिक संस्थाओं की प्रतिष्ठा केवल उनकी प्राचीनता, लोकप्रियता या आर्थिक समृद्धि से नहीं बढ़ती वह उनके चरित्र, पारदर्शिता और सेवा-भाव से निर्मित होती है।

जैन दर्शन का आधार सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और शुचिता है। ये सिद्धांत केवल व्यक्तिगत साधना के लिए नहीं हैं, वे संस्थागत जीवन के भी आधार बनने चाहिए। यदि हमारे ट्रस्टों और धार्मिक संस्थाओं के संचालन में यही मूल्य दिखाई देंगे, तभी समाज का विश्वास स्थायी रहेगा।

समय की माँग है कि प्रत्येक धार्मिक संस्था एक स्पष्ट और प्रभावी धर्म-प्रशासन आचार संहिता अपनाए। प्रत्येक दान का डिजिटल अभिलेखन हो, सोना-चाँदी एवं बहुमूल्य वस्तुओं का नियमित सत्यापन हो, स्वतंत्र ऑडिट अनिवार्य हो, आय-व्यय का वार्षिक विवरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाए, सीसीटीवी जैसी आधुनिक सुरक्षा व्यवस्था अपनाई जाए तथा निर्णय प्रक्रिया व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक उत्तरदायित्व पर आधारित हो। धार्मिक संस्थाओं में पदाधिकारी स्वयं को स्वामी नहीं, बल्कि समाज की धरोहर का संरक्षक मानें।

साथ ही समाज का दायित्व भी कम नहीं है। बिना प्रमाण आरोप लगाना भी अनुचित है और यदि कहीं वास्तविक अनियमितता दिखाई दे तो उसे दबाना भी उतना ही अनुचित है। धर्म की रक्षा अंध-समर्थन से नहीं, बल्कि सत्य, न्याय और पारदर्शिता से होती है।

आज आवश्यकता किसी एक संस्था की आलोचना करने की नहीं, बल्कि प्रत्येक धार्मिक संस्था को ऐसा आदर्श बनाने की है कि वहाँ दान देने वाला प्रत्येक श्रद्धालु पूर्ण विश्वास के साथ कह सके-"मेरा समर्पण सुरक्षित है, मेरी भावना सुरक्षित है और मेरा विश्वास सुरक्षित है।"

धर्म की प्रतिष्ठा भव्य मंदिरों, ऊँचे शिखरों और स्वर्ण कलशों से नहीं, बल्कि निष्कलंक चरित्र, ईमानदार व्यवस्था और जनविश्वास की रक्षा से बढ़ती है। मंदिरों की सुरक्षा आवश्यक है, पर उससे भी अधिक आवश्यक है श्रद्धा की सुरक्षा। क्योंकि जब श्रद्धा सुरक्षित रहती है, तभी धर्म जीवित रहता है और जब धर्म जीवित रहता है, तभी समाज की नैतिक चेतना भी अक्षुण्ण बनी रहती है।

यही वर्तमान के इस घटनाक्रम की सबसे बड़ी सीख है-धर्म की रक्षा केवल पूजा से नहीं, बल्कि पवित्र प्रशासन, पारदर्शी व्यवस्था और अटूट नैतिक उत्तरदायित्व से होती है।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर मामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय सम्मान चयन समिति-2026 का गठन

नई दिल्ली : श्री इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा वर्ष 2026 के राष्ट्रीय सम्मानों के लिए 'जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय सम्मान चयन समिति-2026' का गठन किया गया है। समिति के मुख्य संयोजक के रूप में रमेश भण्डारी जैन (इंदौर) को मनोनीत किया गया है।

समिति में महावीर रांका जैन, डॉ. अशोक पगारिया जैन, कांतिलाल लोढ़ा जैन एवं विपुल जैन को सदस्य बनाया गया है। यह समिति वर्ष 2026 के राष्ट्रीय सम्मानों हेतु विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाली विभूतियों का चयन करेगी। इस वर्ष 'शिवाचार्य ध्यान-साधना राष्ट्रीय सम्मान' के अंतर्गत रुपये 2,51,000 की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी। साथ ही संगठन, दान, स्वाध्याय, तप, सेवा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले समाजजनों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

– अनिल श्रीवास्तव, महाप्रबंधक जैन कॉन्फ्रेंस

लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन भारतीय सेना के उपप्रमुख नियुक्त

भारत सरकार ने लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन को भारतीय सेना का उपप्रमुख (Vice Chief of the Army Staff – VCOAS) नियुक्त किया है। यह पद भारतीय सेना में थल सेनाध्यक्ष (Chief of the Army Staff) के बाद दूसरा सर्वोच्च पद माना जाता है।

उपप्रमुख के रूप में उनकी प्रमुख जिम्मेदारियों में सेना के आधुनिकीकरण को गति देना, युद्धक क्षमता एवं परिचालन तैयारियों को सुदृढ़ बनाना, रणनीतिक योजनाओं का निर्माण तथा प्रशासनिक एवं संचालन संबंधी मामलों में थल सेनाध्यक्ष को सहयोग प्रदान करना शामिल है।

लेफ्टिनेंट जनरल संदीप जैन भारतीय सेना के अत्यंत अनुभवी और दक्ष अधिकारी हैं। उन्हें तीन दशकों से अधिक का समृद्ध सैन्य अनुभव प्राप्त है। अपने लंबे सैन्य जीवन में उन्होंने देश के विभिन्न महत्वपूर्ण ऑप्रेशनल, कमांड और स्टॉफ पदों पर सफलतापूर्वक दायित्वों का निर्वहन किया है।

जैन समाज के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि समाज के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भारतीय सेना के इस प्रतिष्ठित पद पर आसीन होकर राष्ट्र सेवा की नई जिम्मेदारी संभाली है। उनकी नियुक्ति देश की सुरक्षा व्यवस्था के साथ-साथ जैन समाज के लिए भी गौरव और प्रेरणा का विषय है।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल कार्यकाल की मंगलकामनाएँ।

पिंपरी-चिंचवड़ जैन महासंघ का मेधावी छात्र सम्मान समारोह उत्साह के साथ संपन्न

आर्कुडी निगडी (महाराष्ट्र) : पिंपरी-चिंचवड़ जैन महासंघ ने 10वीं और 12वीं कक्षा की परीक्षाओं में अच्छे अंक लाने वाले मेधावी छात्रों को सम्मानित करने के लिए एक भव्य समारोह आयोजित किया। GST और कस्टम विभाग (पुणे डिवीजन) की असिस्टेंट कमिश्नर श्रीमती दामिनी दिवाकर मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल हुईं, जबकि जैन महासंघ के अध्यक्ष श्री श्रेयस पगारिया जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मंच पर महासंघ के संस्थापक अध्यक्ष CA डॉ. अशोककुमार पगारिया जैन, कार्यकारी अध्यक्ष विजय भिलवाड़े, महासचिव संदीप फुलफगर, निवर्तमान अध्यक्ष उमेश पाटिल और GST सुपरिटेंडेंट देवेंद्र बकलीवाल भी मौजूद थे। समारोह के दौरान, 80% से 99% के बीच अंक पाने वाले 110 छात्रों को मुख्य अतिथि और जैन महासंघ व जैन श्रावक संघ के पदाधिकारियों ने स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य शामिल थे।

महिला जगत

दिल्ली महिला शाखा द्वारा दिल्ली के मेयर से शिष्टाचार भेंट

दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा द्वारा दिल्ली के मेयर श्रीमान प्रवेश वाही के निवास स्थान पर शिष्टाचार भेंट की। श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन, कोषाध्यक्षा श्रीमती उर्मिल जैन, सह-कोषाध्यक्षा श्रीमती कौशल्या जैन, उपाध्यक्षा रुवीणा जैन, दिल्ली प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जैन, महामंत्री श्रीमती कनिका जैन, कार्यकारी महामंत्री श्रीमती नीलम जैन, संगठन मंत्री श्रीमती शिखा जैन ने माननीय मेयर श्री प्रवेश भाई का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस मौके पर श्री प्रवेश ने दिल्ली के विकास में जैन समाज के योगदान की अनुमोदना की।

पंजाब महिला शाखा द्वारा धार्मिक संस्कार शिविर का आयोजन

लुधियाना (पंजाब) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा प्रांतीय अध्यक्षा श्रीमती पूनम जैन एवं चेयरपर्सन श्रीमती अंजू जैन के दिशा-निर्देशन में जैन स्थानक सुंदर नगर में सात दिवसीय बच्चों का धार्मिक संस्कार शिविर लगाया गया, जिसमें करीब पचास बच्चों ने भाग लिया। शिविर में सभी दिन अलग-अलग विषयों पर बच्चों को ज्ञानवर्धक बोध करवाया गया।

शिविर का मुख्य उद्देश्य बच्चों को जैन दर्शन, नैतिक मूल्यों और संस्कारित जीवन की शिक्षा देना है। कॉपी राइटिंग में यजुस जैन ने प्रथम, मिष्ठी जैन ने द्वितीय और ऐशना जैन ने तृतीय स्थान हासिल किया। कार्यक्रम में पंजाब प्रांतीय अध्यक्ष श्री अनिल जैन, सुंदरनगर जैन सभाध्यक्ष श्री संजय जैन, श्री संदीप जैन, श्री अंशुल जैन, श्रीमती रीचा जैन, श्रीमती सिम्मी जैन, श्रीमती दीपा जैन, श्रीमती रीतू जैन, श्रीमती योगिता जैन आदि उपस्थित हुए।

समारोह में आगम ज्ञाता, योगीराज श्री अरुणचंद्र जी म. के शिष्य श्री अभिषेक मुनि जी म. ने बच्चों को अपने उद्बोधन द्वारा सरल तरीके से संस्कार देकर गुणवान बनने की प्रेरणा दी। श्री अभिषेक मुनि जी ने शिविर को सफल बनाने व बहुमूल्य योगदान देने के लिए श्रीमती अंजू जैन, श्रीमती रूबी जैन, श्रीमती पूनम जैन, श्रीमती योगिता जैन की अनुमोदना की।

प्रेषक : रीचा संदीप जैन

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा विहार सेवा में समर्पित भाइयों को टी-शर्ट वितरण

दिल्ली : जैन स्थानक, अशोक विहार में पूज्य श्री रितेश मुनि जी महाराज साहब आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में विहार सेवा में समर्पित भाइयों को टी-शर्ट वितरित की गई। इस अवसर पर श्री रितेश मुनि जी महाराज ने विहार सेवा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विहार सेवा एवं साधु-संतों की सेवा करने से तीर्थंकर गोत्र का बंध भी होता है। उन्होंने विहार सेवा टीम द्वारा किए जा रहे श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायी कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और सभी को निरंतर सेवा कार्यों में सक्रिय रहने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री जितेंद्र जैन, दिल्ली प्रदेश महामंत्री श्री ललित ओसवाल जैन, विहार सेवा टीम के अध्यक्ष श्री पंकज जैन, एस.एस. जैन सभा अशोक विहार के महामंत्री श्री पदम पटवा जैन सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

सोशल मीडिया की अभूतपूर्व ग्रोथ ने जैन कॉन्फ्रेंस को दी नई डिजिटल पहचान

नई दिल्ली : बदलते डिजिटल युग में सोशल मीडिया केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने, संस्कृति को संरक्षित करने और सकारात्मक विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त मंच बन चुका है। इसी दिशा में श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ने पिछले 9 महीनों (अक्टूबर 2025 से जून 2026) के दौरान उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए अपनी एक सशक्त और विश्वसनीय डिजिटल पहचान स्थापित की है।

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा संचालित Facebook, Instagram, LinkedIn और YouTube जैसे प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर लगातार किए गए योजनाबद्ध, गुणवत्तापूर्ण एवं मूल्य-आधारित प्रयासों का परिणाम यह रहा कि देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी जैन दर्शन, संस्कृति, सामाजिक गतिविधियों और मानवीय मूल्यों का संदेश पहुँचा। जून 2026 में मासिक डिजिटल रीच (Views) 3.04 लाख से अधिक तथा अब तक टोटल रीच 1 मिलियन से ज्यादा दर्ज की गयी है। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि दर्शक केवल सामग्री देख ही नहीं रहे, बल्कि सक्रिय रूप से उससे जुड़ भी रहे हैं।

धर्म, समाज सेवा और ज्ञान के प्रसार को बनाया डिजिटल अभियान का आधार : जैन कॉन्फ्रेंस की डिजिटल रणनीति का मूल उद्देश्य जैन समाज को एक सांझा मंच पर जोड़ना, धार्मिक एवं सामाजिक जागरूकता फैलाना तथा युवाओं सहित प्रत्येक वर्ग तक जैन सिद्धांतों को सरल और आधुनिक माध्यमों से पहुँचाना रहा। इसी सोच के साथ प्रत्येक पोस्ट को समाजोपयोगी, प्रेरणादायी एवं तथ्यपरक बनाया गया। फरवरी 2026 से जून 2026 के बीच संस्था द्वारा 600 से अधिक धार्मिक, शैक्षणिक, प्रेरणादायी, सामाजिक एवं वैल्यू-बेस्ड पोस्ट, रील्स और वीडियो प्रकाशित किए गए। इन सभी का आधार प्रकाशित जैन साहित्य, प्रामाणिक पुस्तकों तथा विद्वानों के विचार रहे, जिससे सामग्री की विश्वसनीयता और गुणवत्ता बनी रही।

देश ही नहीं, विदेशों में भी बढ़ा प्रभाव : जैन कॉन्फ्रेंस का डिजिटल अभियान अब केवल भारत तक सीमित नहीं रहा। सोशल मीडिया के माध्यम से USA, UK, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, UAE, नेपाल सहित अनेक देशों में बसे फॉलोअर्स ने भी इन प्रयासों को सराहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति और जैन दर्शन की वैश्विक स्वीकार्यता निरंतर बढ़ रही है तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

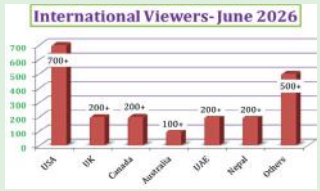

युवाओं को जोड़ने के लिए आधुनिक कंटेंट रणनीति : जैन कॉन्फ्रेंस ने पारंपरिक धार्मिक संदेशों के साथ-साथ आधुनिक प्रस्तुतिकरण शैली को अपनाया। शॉर्ट वीडियो, इन्फॉर्मेटिव रील्स, प्रेरक कहानियाँ, जैन गौरव श्रृंखला, तीर्थंकर परिचय, महापुरुषों के जीवन प्रसंग, युवा प्रेरणा, शिक्षा, करियर मार्गदर्शन, राष्ट्रीय समाचार, सामाजिक अभियानों तथा AI आधारित ट्रेडिंग रील्स जैसे विविध विषयों पर नियमित सामग्री प्रकाशित की गई। इससे युवाओं की भागीदारी उल्लेखनीय रूप से बढ़ी और सोशल मीडिया पर संस्था की सक्रिय उपस्थिति मजबूत हुई।

हमसे जुड़िये :

- Facebook - Saissjc New Delhi
- Instagram - @aissjc1906
- Linkedin - Saissjc New Delhi
- Youtube - @aissjc

प्रेषक : राजेश मेहरा (चीफ ऑफ स्टॉफ)

संजीव जैन (IFS) की उत्तर कोरिया में भारत के राजदूत के रूप में नियुक्ति

भारत के विदेश मंत्रालय (MEA) ने संजीव जैन को डेमोक्रेटिक पीपल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (उत्तर कोरिया) में भारत के अगले राजदूत के रूप में नियुक्त किया है। 2008 बैच के भारतीय विदेश सेवा (IFS) अधिकारी संजीव जैन वर्तमान में काबो वर्डे गणराज्य में भारत के राजदूत के रूप में कार्यरत हैं। वे शीघ्र ही उत्तर कोरिया में अपने नए दायित्व का कार्यभार ग्रहण करेंगे। संजीव जैन ने अपने राजनयिक करियर के दौरान दुबई, पेरिस, कैंडी (श्रीलंका), बर्लिन, टोक्यो और ओसाका स्थित भारतीय दूतावासों एवं वाणिज्य दूतावासों में विभिन्न महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ निभाई हैं। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय संबंधों, वाणिज्यिक मामलों, राजनयिक कार्यों और बहुपक्षीय सहयोग के क्षेत्र में व्यापक अनुभव प्राप्त है।

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

श्री मनीष हिरणमुथा जैन का स्वर्गवास

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री मनीष हिरणमुथा जैन सुपुत्र श्री कुमार हिरणमुथा जैन का बीमारी के चलते 48 वर्ष की अवस्था में आकस्मिक देवलोकगन शनिवार, दिनांक 27 जून की रात्रि में हो गया। आपका परिवार जैन कॉन्फ्रेंस के साथ जुड़कर धार्मिक एवं सामाजिक सेवाएं प्रदान करता आ रहा है।

प्रेषक : हिरणमुथा परिवार

श्रीमती सरसबाई मिठूलाल कर्नावट जैन का स्वर्गवास

तलेगांव दाभाडे (महाराष्ट्र) : सुश्राविका श्रीमती सरसबाई मिठूलालजी कर्नावट (उम्र 93) ने अपनी आत्मा के कल्याण, शुद्धिकरण और कर्मों की निर्जरा के लिए 38 दिवस सागारी संथारा एवं उपवास के पश्चात पूज्य उदयप्रभाजी म. के मुखारविंद से बडा संथारा व्रत स्वीकार किया। 6 जुलाई को संथारा व्रत के चौथे दिन पूर्णाहूती हुई है।

प्रेषक : अनिल मिठूलाल कर्नावट जैन

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

श्री श्वेतांबर स्थानकवासी बाईस संप्रदाय जैन संघ ट्रस्ट बैंगलोर के चुनाव संपन्न

बैंगलोर (कर्नाटक) : गणेश बाग, शिवाजी नगर, बैंगलोर का वार्षिक आम सभा का आयोजन हुआ। आम सभा में ट्रस्ट के नई कमिटी का चयन सर्वसम्मति से हुआ। इलेक्शन ऑफिसर CA मनोज सोलंकी जैन ने नई कमिटी की घोषणा की। सह इलेक्शन ऑफिसर प्रवीण धोखा जैन का इलेक्शन कार्य में सहयोग रहा। पारसमणी रूणवाल जैन को अध्यक्ष, सुरेश जैन चोरड़िया को उपाध्यक्ष, सुरेन्द्र जैन रूणवाल को मंत्री, किशोर जैन गादिया को सह-मंत्री, वसंतराज जैन पोरवाल को कोषाध्यक्ष, कांतिलाल जैन पोरवाल, त्रिलोकचंद कटारिया, अशोक जैन पोरवाल, पंकज जैन कटारिया, मदन जैन रूणवाल एवं शांतिलाल जैन देवड़ा को कमिटी सदस्य नियुक्त किया गया। अध्यक्ष पारसमणी जैन रूणवाल ने सभी ट्रस्टियों एवं मेंबर ट्रस्टी का धन्यवाद ज्ञापन किया। श्री सोहनलाल देवड़ा, श्री शांतिलाल खबिया एवं निर्मल पोरवाल को मार्गदर्शक नियुक्त किया। मंत्री सुरेन्द्र जैन रूणवाल ने सभा से सहयोग की अपेक्षा की और ट्रस्ट के कार्य को सुचारु रूप से आगे ले जाने का आश्वासन किया। पंकज जैन कटारिया ने मंच का संचालन किया।

उत्तर प्रदेश की उपेक्षित संस्थाओं के संरक्षण, संवर्धन का लिया संकल्प

मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज की अनेक वर्षों से उपेक्षित एवं जर्जर पड़ी संस्थाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं पुनर्जीवन का संकल्प लिया गया। इसी क्रम में पूज्य गुरुदेव श्री मुखराम जी महाराज साहब की लगभग 90 वर्ष प्राचीन समाधि का जीर्णोद्धार कराया गया, जिसमें गुरु सेवक परिवार का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

इस पावन परिसर में एक सुंदर पक्षी टॉवर का निर्माण कराया गया, जो आज सैकड़ों पक्षियों का सुरक्षित आश्रय स्थल बन चुका है। वर्तमान में इस परिसर के सौंदर्यीकरण एवं विकास कार्य में श्री सुशील जैन तथा श्री सुनील जी जैन (गाजियाबाद वाले) का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ, जिनके सहयोग से यहाँ टाइल्स लगाने का कार्य भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रहा है।

इस पवित्र समाधि स्थल तक श्रद्धालुओं के आवागमन को सुगम बनाने हेतु माननीय विधायक धर्मेंद्र भारद्वाज के विशेष प्रयासों से लगभग 150 मीटर लंबे मार्ग का निर्माण 'भगवान महावीर स्वामी मार्ग' के रूप में कराया गया। इससे श्रद्धालुओं को समाधि स्थल तक पहुँचने में अत्यंत सुविधा प्राप्त हुई तथा इस पावन स्थल की गरिमा में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

प्रेषक : पुनीत जैन, प्रांतीय युवा अध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 08-07-2026
Date of Posting : 14/15-07-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ❊ अंक : 18 ❊ पृष्ठ : 8
माह : जुलाई ❊ सप्ताह : 08 जुलाई से 14 जुलाई

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

राष्ट्रीय महामंत्री श्री वर्धमानजी पितलिया : संगठन, सेवा और समर्पण के पर्याय

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का इतिहास केवल संस्थाओं और अधिवेशनों का इतिहास नहीं है, बल्कि उन समर्पित व्यक्तित्वों का भी इतिहास है जिन्होंने अपने श्रम, त्याग और दूरदर्शिता से संगठन को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित बनाया। ऐसे ही कर्मयोगी, अनुशासनप्रिय और निःस्वार्थ समाजसेवी थे श्री वर्धमानजी पितलिया (रतलाम, मध्य प्रदेश)। उनका जीवन स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की संगठनात्मक चेतना और सेवा-परंपरा का प्रेरणास्पद अध्याय है।

श्री वर्धमानजी पितलिया का जन्म विक्रम संवत 1937 (1880 ई.) में धर्मनिष्ठ श्रावक श्री अमरचंदजी पितलिया के परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही उन्हें धार्मिक संस्कार, समाजसेवा और संगठन के प्रति समर्पण की प्रेरणा प्राप्त हुई। जैन कॉन्फ्रेंस के द्वितीय रतलाम अधिवेशन के दौरान युवावस्था में ही वे स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधियों से जुड़ गए और शीघ्र ही अपनी कार्यकुशलता, विनम्रता तथा संगठन क्षमता के कारण प्रमुख कार्यकर्ताओं में सम्मिलित हो गए।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रारंभिक विकास काल में उन्होंने श्री दुर्लभ भाई के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे लंबे समय तक राष्ट्रीय महामंत्री (महासचिव) रहे। उनके कार्यकाल में संगठन की प्रशासनिक व्यवस्था अधिक सुदृढ़, अनुशासित और प्रभावी बनी। देशभर की शाखाओं के मध्य समन्वय स्थापित करना, राष्ट्रीय अधिवेशनों की योजनाओं का निर्माण एवं सफल संचालन, संगठनात्मक निर्णयों का क्रियान्वयन तथा कार्यकर्ताओं को एक सूत्र में बाँधकर कार्य करना उनकी विशेषता थी। वे मानते थे कि संगठन की शक्ति पद में नहीं, बल्कि कार्यकर्ताओं के पारस्परिक विश्वास, अनुशासन और सेवा-भाव में निहित होती है।

रतलाम स्थित स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस ट्रेनिंग कॉलेज की स्थापना, विकास एवं दीर्घकालीन संचालन में उनका विशेष योगदान रहा। यह संस्थान संगठन के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण केंद्र बना। जब तक कॉन्फ्रेंस का कार्यालय रतलाम में रहा, तब तक उसके संचालन, अभिलेखीय व्यवस्था तथा संगठनात्मक गतिविधियों के प्रमुख आधारस्तंभ श्री वर्धमानजी ही थे।

वे रतलाम हितैषी श्रावक मंडल के प्रमुख पद पर भी रहे और धर्म, शिक्षा तथा समाजोपयोगी कार्यों को निरंतर प्रोत्साहन दिया। उनकी प्रशासनिक दक्षता के साथ-साथ उनकी सरलता, विनम्रता और आत्मीय व्यवहार ने उन्हें समाज के प्रत्येक वर्ग में सम्मान दिलाया। समाज में उत्पन्न होने वाले जटिल विषयों का वे शांत, संतुलित और व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करते थे।

श्री वर्धमानजी पितलिया की साधुमार्गी स्थानकवासी जैन संघ के पूज्य आचार्य श्री श्रीलालजी महाराज तथा युगप्रधान आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज के प्रति अटूट श्रद्धा थी। वे दोनों आचार्यों के विश्वसनीय, समर्पित एवं प्रमुख सलाहकार श्रावकों में गिने जाते थे। आचार्यों के मार्गदर्शन में उन्होंने धर्म, संगठन और समाज की सेवा को जीवन का सर्वोच्च आदर्श माना। गुरुभक्ति और संगठन - निष्ठा उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी।

उनका जीवन अंत तक धर्ममय रहा। विक्रम संवत 1998 (1941-42 ई.) में रात्रिकालीन प्रतिक्रमण के दौरान ही उन्होंने शांतिपूर्वक देह का त्याग किया। धर्मस्मरण करते हुए जीवन का समापन उनके साधनामय जीवन की सर्वोच्च परिणति थी।

श्री वर्धमानजी पितलिया उन विरले संगठन-पुरुषों में थे जिन्होंने कभी पद को प्रतिष्ठा का माध्यम नहीं बनाया, बल्कि उसे समाजसेवा का उत्तरदायित्व समझा। उनकी कार्यशैली, संगठन - कौशल, अनुशासनप्रियता, गुरुभक्ति और निस्वार्थ सेवा - भाव ने स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। आज भी उनका जीवन समाजसेवियों और संगठन के कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है तथा स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली इतिहास का एक उज्ज्वल और अविस्मरणीय अध्याय बना हुआ है।

साधना और संस्कृति का आधार : चातुर्मास

- महेन्द्र बोकरिया जैन-वरिष्ठ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस-दिल्ली

चातुर्मास केवल चार महीनों का समय नहीं, बल्कि संयम, साधना, स्वाध्याय और आत्मकल्याण का महापर्व है। वर्षा ऋतु में सूक्ष्म जीवों की अधिक उत्पत्ति होने के कारण जैन साधु-साध्वियाँ विहार का त्याग कर एक ही स्थान पर विराजमान रहते हैं। यह परंपरा अहिंसा के सर्वोच्च आदर्श का जीवंत स्वरूप है, जहाँ प्रत्येक जीव के अस्तित्व और जीवन के प्रति संवेदनशीलता का संदेश दिया जाता है।

चातुर्मास का लाभ केवल साधु-साध्वियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह समस्त जैन समाज के लिए आध्यात्मिक जागरण का अवसर बन जाता है। इन दिनों प्रवचन, स्वाध्याय, सामायिक, प्रतिक्रमण, तप, आयंबिल, उपवास और जिनवाणी के अध्ययन के माध्यम से आत्मशुद्धि का प्रयास किया जाता है। अनेक श्रद्धालु किसी दुर्व्यसन का त्याग, किसी सद्गुण का स्वीकार या नियमित धार्मिक आराधना का संकल्प लेकर अपने जीवन को नई दिशा देते हैं।

वास्तव में, चातुर्मास जैन संस्कृति की जीवंत धरोहर है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों का समय नहीं, बल्कि व्यक्ति, परिवार और समाज के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान का स्वर्णिम अवसर है। यदि चातुर्मास की साधना को जीवन का संस्कार बना लिया जाए, तो यही चार महीने पूरे वर्ष के लिए सदाचार, संयम और आत्मकल्याण की प्रेरणा बन सकते हैं।

जैन गौरव

कर्मवीर भाऊराव पाटिल

कर्मवीर भाऊराव पाटिल जैन महाराष्ट्र प्रांत के शैक्षिक क्रांति के जनक माने जाते हैं। आपने शिक्षा को जन सामान्य तक पहुँचाने के लिये पढ़ाई के साथ कमाई का सिद्धांत लागू किया था।

भारत में कर्मवीर भाऊराव पाटिल के नाम से संचालित सबसे रयत शिक्षण संस्थान है, जिसकी लगभग 1000 शाखाएँ हैं।

आपका संकल्प था कि जितने मेरी दाढ़ी में बाल हैं, उतने स्कूल खोलूँगा। आपने जीवन भर नंगे पैर चलकर गाँव-गाँव जाकर गरीब असहाय बच्चों को शिक्षा से जोडकर लाखों बच्चों का भविष्य उज्ज्वल किया था।

इस शैक्षिक क्रांति में आपकी पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान था। बोर्डिंग में पढ़ने वाले छात्रों को त्योहार में खिलाने के लिये जब एक अन्न का दाना भी नहीं था और पाटिल जी बाहर गये थे। तब आपने अपना मंगलसूत्र बेचकर बच्चों के भोजन की व्यवस्था की थी।

भारत सरकार ने भाऊराव को 1959 में पद्म भूषण उपाधि से सम्मानित किया था। पूना विश्वविद्यालय ने डी. लिट् की उपाधि प्रदान की। आपके सम्मान में भारत सरकार द्वारा 9 मई 1988 को 60 पैसे का डाक टिकट जारी किया गया था।

कविता का कोना

रजोहरण : छह क्षणिकाएँ

एक नाम है ओघा इसका, एक नाम है रजोहरण।
लघु हो तो कहें पूंजणी, साधक का एक मुख्य उपकरण।
सूक्ष्म अहिंसा के पालन का, अद्भुत आविष्कार।
रजोहरण कहता है कर लो, प्राणी मात्र से प्यार।
मुँहपत्ती और रजोहरण का, आगम में समुचित वर्णन है।
छोटे-छोटे जीवों की भी, यतना के उत्तम साधन हैं।
सामायिक या प्रतिक्रमण। श्रावक हो या श्रमण।
प्रेरणा देता रजोहरण। करें सजग आचरण।
मुनियों का आदर्श उपकरण, अहिंसा का सच्चा प्रतीक।
जीवदया का बढ़िया साधन, रजोहरण है नाम सटीक।
भाग्यवान को मिलता है यह, रजोहरण से सीख लीजिए।
बाहर की रज हरते हरते। कर्मों की रज दूर कीजिए।

- डॉ. दिलीप धींग जैन, चेन्नई
(पूर्व निदेशक : अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत केन्द्र)

श्री मरूधर केसरी गुरूभ्यो नमः

देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में

नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर

HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.

जय गुरू रूप

जय गुरू मरूधर केसरी

जय गुरू सुकन

कोटिशः वंदन नमन

नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7666540600 Jainn07@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ❊ सम्पर्क : 90197 31906